Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

August-2024

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

आर्य जगत् में फकीरे दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध श्री एस.पी. कुमार जी के 78वें जन्मोत्सव के अवसर पर दिनांक 7 जुलाई, 2024 को विशेष यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

'वैदिक जीवन' नामक पुस्तक का भव्य लोकार्पण समारोह श्री एस. जयराम जी के कर-कमलों द्वारा किया गया

वैदिक संगीत का कार्यक्रम श्रीमती लक्ष्मीराम एवं श्रीमती वाणी ने प्रस्तुत किया

श्री एस.पी. कुमार जी आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र हैं - श्री एस. जयराम

श्री एस.पी. कुमार जी का जीवन प्रेरणादाई है - सिमरनजीत कौर (सिम्मी माई)

आप हम सभी के साथ-साथ आर्य समाज के अभिमान हैं - श्री रवि भटनागर

श्री एस.पी. कुमार जी जब से आर्य समाज में आये कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा - विमल वधावन योगाचार्य

वैदिक विवेक प्रचार कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ

आर्य जगत् में फकीरे दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध श्री एस. पी. कुमार जी के 78वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 7 जुलाई, 2024 को विशेष यज्ञ, प्रवचन एवं वैदिक संगीत का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कुमार जी के जीवन पर आधारित संक्षिप्त जीवन परिचय के रूप में प्रकाशित 'वैदिक जीवन' नामक पुस्तक का भव्य लोकार्पण प्रसिद्ध समाजसेवी श्री एस. जयराम जी के कर–कमलों द्वारा किया गया तथा वैदिक विवेक प्रचार कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर (संचार माध्यम से उपस्थित स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी महाराज), श्री एस. जयराम, अमेरिकावासी सिम्मी माई (सिमरनजीत कौर), श्री विमल वधावन योगाचार्य, श्री एस.पी. कुमार, श्री रवि भटनागर, आचार्य रामतीर्थ शास्त्री जी, श्री अभिमन्यु कुमार, कर्नल एच. सी. शर्मा, श्री आशीष श्रीवास्तव सहित अनेक विद्वान् एवं गणमान्य महानुभावों के साथ–साथ मातृशक्ति तथा वैदिक सत्संग के प्रेमी बच्चे भी भारी संख्या में उपस्थित रहे तथा ऑन लाईन के माध्यम से भी आर्यजन सम्मिलित रहे। श्री कुमार जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः 10 बजे विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् वैदिक संगीत का

कार्यक्रम आर्य जगत् की प्रसिद्ध विदुषी बहन श्रीमती लक्ष्मीराम एवं श्रीमती वीणा आर्या ने प्रस्तुत किया जिसे सभी लोगों ने भाव–विभोर होकर सुना। कार्यक्रम का संचालन श्री विमल वधावन योगाचार्य जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर श्री कुमार जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक पदों पर रहे तथा सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विमल वधावन योगाचार्य जी ने कहा कि श्री एस.पी. कुमार जी का पूरा नाम सूरज प्रकाश कुमार है। उन्होंने कहा कि कुमार जी का जैसा नाम है वैसा ही उनका कार्य भी है। श्री सूरज प्रकाश कुमार जी आर्य समाज में जबसे आये हैं उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनका जीवन आर्य जगत् के लिए प्रेरणादाई है। श्री कुमार जी ने दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रान्त में आकर आर्य समाज के कार्यों को जिस तरह से आगे बढ़ाया है वह अपने आपमें अनुपम है। श्री कुमार जी ने कर्नाटक में आकर कन्नड़ भाषा भी सीखी जिससे लोगों के बीच में अपनी बात रखने में आसानी हो सके। उनके इन सब कार्यों से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके मन में आर्य समाज के प्रति कितनी अधिक तड़प है। श्री कुमार जी ने 7 सितम्बर, 2008 को आर्य समाज मारतहल्लि की स्थापना करके बंगलौर में आर्य समाज का एक भव्य केन्द्र स्थापित किया जिसकी चर्चा आज देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी हो रही है। श्री कुमार जी के वैदिक सिद्धान्तों के प्रति समर्पण के कारण ही इस आर्य समाज में वेद स्वाध्याय का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है। आज उनके 78वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान **'वैदिक विवेक'** प्रचार कार्यक्रम का शुभारम्भ वेद ज्ञान के प्रति समर्पित प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के निर्देशन में प्रारम्भ किया जा रहा है। मैं आदरणीय श्री कुमार जी के 78वें जन्म दिवस के अवसर पर अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु प्रदान करने की कृपा करें जिससे लम्बे समय तक वैदिक विचारधारा को आगे बढ़ाने में उनका अमूल्य योगदान, सहयोग एवं मार्गदर्शन हम सभी को प्राप्त होता रहे।

इस अवसर पर कर्नाटक के सुप्रसिद्ध बिल्डर्स, सामाजिक एवं धार्मिक सेवा में अग्रणी श्री एस. जयराम जी ने श्री कुमार जी के 78वें जन्मदिन के अवसर पर प्रकाशित पुस्तक **'वैदिक जीवन'** का विमोचन करते हुए अपनी ओर से श्री कुमार जी को कर्नाटक शैली में पगड़ी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि श्री कुमार जी से जब हमारी पहली मुलाकात हुई तभी मैंने पहचान लिया था कि श्री कुमार जी मानवता के पुजारी हैं। उन्होंने कहा कि श्री कुमार जी आर्य समाज के माध्यम से अनेक ऐसे कार्य कर रहे हैं जो अपने आपमें अनुकरणीय है। श्री कुमार जी वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए गरीब परिवार के बच्चों के लिए जो कार्य कर रहे हैं उससे हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और श्री कुमार जी का सहयोग करना चाहिए। देश के विभिन्न गुरुकुलों एवं सामाजिक संगठनों का सहयोग भी श्री कुमार जी समय–समय पर करते रहते हैं और आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के माध्यम से समाज में जन–जागृति फैला रहे हैं। मैं पुनः उनके 78वें जन्म दिन की शुभाकामनाएं देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें पूर्ण स्वस्थ रखें तथा दीर्घायुष्य जीवन प्रदान करें। मैं अपनी ओर से आश्वासन देता हूँ कि श्री कुमार जी का सामाजिक कार्यों के लिए जो भी

आदेश होगा उसे मैं पूर्ण करने का प्रयास करूंगा।

इस अवसर पर पंजाब से पधारीं अमेरिका निवासी सिम्मी माई (सिमरनजीत कौर) ने श्री कुमार जी को 78वें जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घायुष्य जीवन के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि मैं जब से यहाँ आई हूँ तब से सभी को देखकर प्रसन्न हूँ। हम सभी को यह अवश्य जानना और समझना चाहिए कि मैं कौन हूँ। प्रेम के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। आज प्रत्येक व्यक्ति की सोच बन चुकी है कि पहले हमें वह प्यार करे, तब मैं सोचूंगा/सोचूंगी। परन्तु हमें आगे बढ़कर एक–दूसरे से प्रेम करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। एक–दूसरे को रास्ता देने के लिए स्वयं को रोककर दूसरे को रास्ता देना चाहिए। उन्होंने कहा कि श्री कुमार जी का जीवन एक प्रेरणादाई एवं अनुकरणीय है। उनके कार्यों से हम सभी को प्रेरणा लेकर समाज एवं राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए।

वैदिक विद्वान् श्री रवि भटनागर जी ने श्री कुमार जी को 78वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि अग्निहोत्र के पश्चात् संगीत के माध्यम से श्री कुमार जी का जन्मदिन मनाया गया। अनेक विद्वानों के प्रवचन सुनने को मिले। महर्षि दयानन्द जी ने भी कहा है कि प्रेम से ही सबकुछ हासिल किया जा सकता है। वैदिक वाङमय एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपार श्रद्धा एवं सम्पूर्ण निष्ठा तथा अगाध प्रेम रखते हुए श्री सूरज प्रकाश कुमार जी ने 78वर्ष पूर्ण करते हुए अपने जीवन की आगे की यात्रा प्रारम्भ कर रहे हैं। श्री कुमार जी अर्वाचीन ज्ञान, प्राचीन ज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान के पुरोधा हैं। उन्होंने कहा कि कुमार जी आर्य समाज के सशक्त हस्ताक्षर हैं। आप पुरुषार्थ एवं पराक्रम के पर्यायवाची हैं। श्री कुमार जी बंगलौर आने के पश्चात् ही आर्य समाज के अपने साथियों को लेकर आर्य समाज को पुष्पित एवं पल्लवित करने का कार्य किया जो आज वट वृक्ष के रूप में तैयार हो चुका है। आज मैं अपने मित्र को जन्मदिन तथा वैवाहिक जीवन की वर्षगांठ की शुभकामनाएं देते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपको स्वस्थ एवं समृद्ध बनायें। आप हम सबके साथ–साथ आर्यों के अभिमान हैं। उन्होंने कुछ पंक्तियों के माध्यम से शुभकामनाएं देते हुए पंक्तियों को सुनाया।

माता अनुराधा हार्दिकर जी ने श्री कुमार जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। कुछ पंक्तियों के माध्यम से अपना शुभाआशीष प्रदान किया। माता जी ने कहा कि आज पूरा आर्य समाज प्रसन्न है और हम सभी की बधाई को स्वीकार करें। माता जी ने कहा कि हम सभी प्रातः सूर्य को देखते हैं और वह हमारे लिए कार्य करते हैं, परन्तु हमसे कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं। उसी प्रकार से हमारे श्री सूरज प्रकाश कुमार जी हैं जो अपने मधुर व्यवहार से सभी के प्रिय हैं। आपके कार्यों को देखकर ही मैं बहुत दूर रहते हुए भी आर्य समाज में खिंची चली आती हूँ, जब तक मैं आने लायक रहूंगी तब तक आती रहूंगी। मैं आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य जीवन की कामना करती हूँ।

जन्मदिन का कार्यक्रम बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम के उपरान्त सभी लोगों के लिए सुस्वाद भोजन एवं प्रसाद की व्यवस्था की गई थी जिसे उपस्थित सभी आर्यजनों ने ग्रहण किया। श्री कुमार जी ने जन्मदिन के कार्यक्रम में पधारे सभी आगन्तुक महानुभावों के प्रति आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया।

हमारे सत्संग

श्री एस.पी. कुमार जी का जीवन अनुकरणीय है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 7 जुलाई, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए पंजाब से पधारीं अमेरिका निवासी सिम्मी माई (सिमरनजीत कौर) ने श्री कुमार जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने अपना उद्‌बोधन देते हुए कहा कि मैं कौन हूँ और आप सब कौन हैं। मैं जब से यहाँ आई हूँ तब से सभी को देखकर प्रसन्न हूँ, परन्तु हम सभी को यह अवश्य जानना और समझना चाहिए कि मैं कौन हूँ। उन्होंने कहा कि यह जो कुछ भी दिखाई दे रहा है उन सभी में ईश्वर हैं। ईश्वर कण–कण में है। हम जो–जो भी कर्म करते हैं उन सभी में उसका हाथ होता है। इसलिए उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में हम सभी को अवश्य चिन्तन–मनन करना चाहिए। हम सभी को जब भी किसी चीज की आवश्यकता हो तो उसी से मांगना चाहिए। एक बार आपको अपने रिश्ते–नाते धोखा दे सकते हैं, परन्तु ईश्वर आपकी हमेशा सहायता करता है। उन्होंने बताया कि हमने अमेरिका में सत्संग के दौरान सत्संग में पधारे लोगों एवं बच्चों से कहा कि आप सभी भगवान को पत्र लिखो। ईश्वर को पाने के लिए प्रेम आवश्यक है। हमें आपस में झगड़ना नहीं चाहिए, सभी के साथ प्रेम के साथ रहना चाहिए। प्रेम के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। आज प्रत्येक व्यक्ति की सोच बन चुकी है कि पहले हमें वह प्यार करे, तब मैं सोचूंगा/सोचूंगी। परन्तु हमें आगे बढ़कर एक–दूसरे से प्रेम करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। एक–दूसरे को रास्ता देने के लिए स्वयं को रोककर दूसरे को रास्ता देना चाहिए। ऐसा करने पर निश्चित रूप से ही आप ईश्वर के नजदीक पहुंचते जायेंगे। अपने प्रवचन के दौरान उन्होंने कहा कि बाहर कुछ नहीं रखा है, सब आपके अन्दर है। उन्होंने कहा कि यदि हम कोई बड़ा उपकार नहीं कर सकते तो हमें छोटे–छोटे उपकार के कार्य करते रहना चाहिए। जिस तरह से बच्चे बिना के.जी, एल. के.जी. पास किये 10वीं, 12वीं नहीं कर सकते हैं, उसी प्रकार से छोटे–छोटे समाजसेवा के कार्यों को करते हुए ही बड़े कार्य किये जा सकते हैं। जिस तरह से हम भगवान की आरती करते हैं, उसी प्रकार से हमें अपने बड़े–बुजुर्गों का आदर सम्मान करते हुए उनकी आरती करनी चाहिए। क्योंकि उन्होंने हमारे बचपन में न जाने कितने दुःख सहन करके हमें पाला–पोसा होगा। उन्होंने अपनी ओर से श्री कुमार जी को 78वें जन्मदिन की शुभकामना देते हुए उनके दीर्घायुष्य जीवन की कामना की।

सिम्मी माई ने कहा कि श्री कुमार जी के कार्यों को देखकर यह कहा जा सकता है कि जिस तरह से ईश्वर निःस्वार्थ भाव से हमारे सारे कार्य करता है, उसी तरह से श्री कुमार जी ने मानव समाज के लिए कार्य करते हुए अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं। मैं पुनः आप सभी से प्रार्थना करती हूँ कि एक–दूसरे के अन्दर भगवान को मानते हुए व्यवहार करें और समाज की सेवा करते रहें।

वेद को मानने वाले ही आस्तिक हैं

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 14 जुलाई, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि जब हम इतिहास के पन्नों को पलटते हैं तो महाभारत से पहले यानि आज से 5 हजार वर्ष पूर्व कुछ युद्ध हुए और वह युद्ध हुए धन के लिए। महाभारत के रूप में एक और युद्ध देखा जिसे हम धर्मयुद्ध कह सकते हैं। यानि इस संसार में दो प्रकार के युद्ध चल रहे हैं। धर्म युद्ध तथा धन युद्ध। धर्म युद्ध का हमारा मतलब है ईश्वर भक्ति और धन युद्ध का तात्पर्य है कुर्सी, धन–सम्पदा। इन दो युद्धों के प्रमुख कारण हैं वेद के मार्ग पर न चलना। आज भी जो युद्ध चल रहे हैं वह सभी वेद मार्ग पर न चलने के कारण ही हो रहे हैं। चाहे इजरायल और हमास के युद्ध हों या रूस और यूक्रेन का युद्ध हो। सभी धन और भूमि के लिए लड़ रहे हैं। एक वे लोग हैं जो कहते हें कि हमारे ऋषियों ने बताया है कि ईश्वर है, इसलिए हम ईश्वर को मानते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो लोग ईश्वर को जानते हैं, उनकी संख्या कम है। जो ईश्वर को नजदीक से जान जाते हैं उनका जीवन तृप्त हो जाता है। आज उनकी संख्या अधिक है जो यह कह रहे हैं कि लोगों ने कहा है कि ईश्वर है इसलिए हम ईश्वर को मानते हैं। इसके नाम पर वे धूप बत्ती, अगरबत्ती, घंटी बजाकर ईश्वर को मानते हैं। आज जो अनेक विचारधाराएं उत्पन्न हो चुकी हैं उसका मुख्य कारण है कि लोग वेद मार्ग पर नहीं चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो वेद को न माने वह नास्तिक है, जो मूर्ति में ईश्वर को न माने वह नास्तिक नहीं है। वेद में ईश्वर की जो व्याख्या की गई यदि उसे कोई नहीं मानता तो वह नास्तिक है। वेद में जो सिद्धान्त बताये गये हैं उस पर जो लोग चलते हैं समझ लीजिए वे आस्तिक हैं। जो लोग वेद मार्ग से विमुख चल रहे हैं समझ लीजिए वे नास्तिक हैं। जो लोग किसी के कहने से ईश्वर को मानते हैं ऐसे लोग ज्यादा दिन तक टिक नहीं सकते और जो लोग ईश्वर को जानते हैं, वेद मार्ग पर चलते हैं उनका जीवन धन्य है। महर्षि दयानन्द जी ने क्या–क्या बातें कही हैं यह बड़ी बात नहीं है, परन्तु उन्होंने जो बात कही वह वेद पर आधारित है, इसलिए वह बड़ी बात है।

15वीं शताब्दी में निकोलस ने कहा कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगा रही है। जबकि 18वीं शताब्दी में जार्ज बर्नाडस शॉ ने कहा कि पृथ्वी सूर्य और चन्द्रमा का चक्कर नहीं लगा रही है जबकि ये सभी पृथ्वी के चक्कर लगा रहे हैं। जब उनसे कहा गया कि आप यह सब कैसे कह सकते हो तो उन्होंने कहा कि क्योंकि मैं पृथ्वी पर रहता हूँ इसलिए मुझे पता है। एक सदी के बाद गैलीलियो ने कहा कि पृथ्वी चक्कर लगाती है। आचार्य जी ने कहा कि आज संसार में ईश्वर को जो मानने की प्रथा चल रही है, वह केवल दिखावे पर चल रही है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से प्रकाश को देख नहीं सकते बल्कि प्रकाश से वस्तुओं को देख सकते हैं। इसलिए जब तक आप वेद ज्ञान का अध्ययन करके ईश्वर के स्वरूप को नहीं जान पायेंगे तब

तक आप केवल बाहर बनाये गये चित्रों को देख सकते हो। जिस दिन आप उस ईश्वर को जान लेंगे तो आपका जीवन उज्जवल हो जायेगा। हम सभी बोलते हैं कि कण–कण में ईश्वर है। जबकि दूसरी तरफ कुछ लोग बोलते हैं कि ईश्वर में ब्रह्माण्ड है। इन दोनों में दूसरा वाला प्रबल है। वेद मंत्र में भी है कि ईश्वर में ही ब्रह्माण्ड है। इस पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वर रमा हुआ है। यह पूरा ब्रह्माण्ड ईश्वर से आच्छादित है। उन्होंने कहा कि यह जगत चलायमान है। ईश्वर चलायमान नहीं है वह सर्वव्यापक है वह स्थिर है। ईश्वर ब्रह्माण्ड का कर्त्ता है, जबकि भोग जीव करता है। वेद के मन्त्र ने कहा है कि इस ब्रह्माण्ड में तीन शक्तियाँ हैं – ईश्वर, प्रकृति और जीव। इनके बारे में समझना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है।

ईश्वर ही सच्चा गुरु होता है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 21 जुलाई, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि आज गुरु पूर्णिमा का दिन है। आज हम सभी अपने गुरुओं को याद करते हैं। मनुष्य के जीवन में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वही हमें अच्छे मार्ग का दिग्दर्शन कराते हैं जिससे हम अपने जीवन को सही मार्ग पर चलाकर समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते हैं। जब बालक छोटा होता है तो उसके माता–पिता ही उसके गुरु होते हैं। बचपन में उसे अच्छी–अच्छी बातें सिखाकर संस्कारित करते हैं। बच्चे के साथ सबसे अधिक माता ही होती है। इसलिए बच्चे की सर्वप्रथम गुरु माता ही होती है। जब बच्चा बड़ा होता है तो वह शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए अपने गुरु के पास जाता है और वहां से अच्छे–अच्छे ज्ञान प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर ही हमारा सच्चा गुरु है। उसी की प्रेरणा और आशीर्वाद से ही हमारे सारे कार्य होते हैं। माता–पिता और गुरु की शिक्षाएं जहाँ काम नहीं करती वहाँ पर ईश्वर का ही ज्ञान कार्य करता है। इसलिए मनुष्य को ईश्वर की शरण में रहकर कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। ईश्वर ही परम ज्ञान को प्रदान करता है। ईश्वर पूर्ण उदारभाव से ज्ञान प्रदान करता है। बिना ईश्वर को जाने, पहचाने हमें कोई कार्य नहीं करना चाहिए। ईश्वरीय ज्ञान वेद को मानने वाले आस्तिक होते हैं। जिनको वेद का ज्ञान नहीं है वह किसी शरीरधारी को ईश्वर मानते हैं और दर–दर भटकते रहते हैं तथा अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं। धर्माचार्य जी ने कहा कि जब तक हम किसी चीज को समझेंगे नहीं, जानेंगे नहीं तब तक कैसे पहचान सकते हैं। जब हम जानेंगे, पहचानेंगे तब मानेंगे तो उसमें अधिक आनन्द और संतुष्टि प्राप्त होती है। जो व्यक्ति ईश्वर का साक्षात्कार करके दर्शन करते हैं उन्हें अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती है। यदि सच्चे ईश्वर को जानना है तो हमें ऐसे गुरु के सम्पर्क में जाना होगा जिसे वेद का ज्ञान हो, क्योंकि वेद को मानने और जानने वाला ही सच्चा ईश्वर भक्त होता है। मनुष्य को प्रतिदिन सुबह–शाम कम से कम एक घण्टे ईश्वर भक्ति के लिए समय निकालकर उसका ध्यान–साधना करना चाहिए। ईश्वर को जानने और समझने का प्रयास करना चाहिए। आज गुरु पूर्णिमा के दिन हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि प्रत्येक दिन ईश्वर भक्ति और ईश्वर का ध्यान करते हुए अपना जीवनयापन करेंगे और समाज एवं राष्ट्र की सेवा करेंगे। इस तरह के संकल्प के साथ जीवनयापन करने वाले मनुष्य का ही गुरु पूर्णिमा मनाना सफल होता है। जब तक मनुष्य के मन में अनेक ईश्वरवाद की भावना रहेगी तब तक उसका जीवन सफल नहीं हो सकता। क्योंकि वेद हमें एकेश्वरवाद का ज्ञान देता है। ईश्वर एक है और उसी की पूजा करना उचित है। हम सभी को वेद मार्ग पर चलते हुए एकेश्वरवाद की पूजा करते हुए अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए। आज हम सभी यह भी संकल्प लें कि कम से कम सप्ताह में एक वेद मंत्र को अवश्य पढेंगे और यदि घर में कोई आवश्यक कार्य न हो तो रविवार के साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाज में अवश्य आयेंगे।

राष्ट्र रक्षा सर्वोपरि

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 28 जुलाई, 2024 को रविवारीय सत्संग में अपने विचार रखते हुए धर्माचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने कहा कि आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व राष्ट्रविरोधी शत्रुओं ने हमारी भूमि पर कब्जा करने का कुप्रयास किया और हमारे शौर्य को कलंकित करने का कार्य किया था, परन्तु हमारे देश के बहादुर जवानों ने उन्हें मारकर अपनी भारत भूमि से बाहर खदेड़ दिया। इस संघर्ष में अनेक बहादुर जवान शहीद हो गये परन्तु हमारे वीर जवानों ने शत्रुओं का दमन करके भारत की सीमा से खदेड़ कर ही दम लिया। आज हम सभी अपने वीर शहीदों के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए उन्हें नमन करते हैं। आर्य समाज सदैव से ही राष्ट्ररक्षा के यज्ञ में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है और भारत की रक्षा में लगे समस्त वीर जवानों का सम्मान करता है।

आचार्य जी ने कहा कि शरीर रूपी राष्ट्र में यदि कोई रोग उत्पन्न हो जाता है तो उसे भी हमें सजगता के साथ खत्म करने का प्रयास करना चाहिए। उसी प्रकार यदि राष्ट्र रूपी शरीर में कोई घुसपैठ कर ले या करने का प्रयास करे तो उससे हमें सतर्क होकर उसका मुकाबला करते हुए उसे भगाकर ही दम लेना चाहिए। हमारे बहादुर सैनिक अपनी जान की बाजी लगाकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। वे रात–दिन सजग रहते हुए अपने राष्ट्र की रक्षा में लगे रहते हैं। हमें उनके शौर्य और पराक्रम पर गर्व है। आचार्य जी ने कहा कि हर क्षेत्र में तप की आवश्यकता होती है। यदि हमारे अन्दर ओज और तेज नहीं है तो हम कमजोर ही दिखाई देंगे जैसे हाथी के पास अपार शक्ति और बल है परन्तु उसके अन्दर ओज और तेज नहीं है इसलिए वह ज्यादा कुछ नहीं कर पाता, वहीं शेर में ओज और तेज है इसलिए वह अपने दुश्मन पर तुरन्त काबू पा लेता है और अपने शिकार को मार गिराता है। कहने का तात्पर्य है कि हमारे जवान शेर की भांति ओजवान और तेजवान है।

आचार्य जी ने वेद मन्त्रों के माध्यम से कहा कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक और राजनेताओं को राष्ट्र की रक्षा में अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए। प्रत्येक गृहस्थ लोग परमात्मा का नमन करते हुए राष्ट्र रक्षा के लिए एक विचार रखें। प्रत्येक राजनेता भी राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिए एकमत होकर राष्ट्र के लिए कार्य करें। सभी के हृदय में राष्ट्र रक्षा सर्वोपरि होनी चाहिए।

ऋग्वेद-1.3.7

ओमा॑सश्चर्षणीधृतो॒ विश्वे॑ देवास॒ आ ग॑त।
दा॒श्वांसो॑ दा॒शुषः॑ सु॒तम्।।7।।

ओमासः - परमात्मा का गुण जिसके द्वारा अपनी अपार शक्तियों जैसे ज्ञान, विज्ञान, शुभ गुण तथा अनुभूतियों से वे हर वस्तु की रक्षा करते हैं

चर्षणीधृतः - अपने सत्य उपदेशों (वेद) से सबको धारण करते हैं

विश्वेदेवासः - सभी महान तथा बुद्धि में प्रकाशित महानुभाव जिन्होंने परमात्मा तथा उसके ज्ञान की अनुभूति प्राप्त कर ली है

आ गत - कृपया हमारे पास आईये (हमारी अनुभूति में)

दाश्वांसः - अपने दिव्य लक्षणों से आप हमें भयमुक्त बना सकते हैं

दाशषः - सब लोगों को देते हैं

सुतम् - सभी विज्ञानों तथा शुभ गुणों का ज्ञान

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार इस ब्रह्माण्ड में सबको धारण तथा संरक्षित करते हैं?

परमात्मा के दो मुख्य लक्षण हैं :-

1. अपनी अपार शक्तियों जैसे ज्ञान, विज्ञान तथा शुभ गुणों के आधार पर वे सबका संरक्षण करते हैं।

2. अपने ज्ञान के आधार पर वे सबको धारण करते हैं।

अतः हमें उन सभी महान व्यक्तियों को आमंत्रित तथा स्वागत करना चाहिए जो परमात्मा के ज्ञान और शक्तियों की अनुभूति प्राप्त कर चुके हैं। ऐसे महान व्यक्ति भी हमारे लिए दो महान लाभकारी कार्य कर सकते हैं :-

1. हमें भयमुक्त बना सकते हैं।

2. हमें सभी विज्ञानों तथा शुभ गुणों का सत्य ज्ञान दे सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण ज्ञान तथा विशेषज्ञ अनुभव का क्या महत्त्व है?

किसी भी क्षेत्र के पूर्ण ज्ञान तथा विशेषज्ञ अनुभव का सर्वत्र स्वागत किया जाता है, क्योंकि यह दो मुख्य तरीकों से सहायक होता है :-

1. शक्ति को प्रदान करके यह बाधाओं के प्रति भय समाप्त कर देता है।

2. यह हमें सत्य ज्ञान से अवगत करा देता है।

इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण ज्ञानयुक्त तथा शक्तिशाली व्यक्तित्त्व बनाना चाहिए। प्रगतिशील महान भविष्य तभी सम्भव हो सकता है जब कोई व्यक्ति अपने पूर्ण ज्ञान से अन्य लोगों को भी दुःखों और कष्टों से संरक्षण प्रदान कर सके।

ऋग्वेद-1.3.8

विश्वे॑ दे॒वासो॑ अ॒प्तुरः॑ सु॒तमा ग॑न्त॒ तूर्ण॑यः।
उ॒स्रा इ॑व॒ स्वस॑राणि।।8।।

विश्वे देवासः - बुद्धि में प्रकाशित समस्त महान लोग जिन्होंने परमात्मा तथा उनके ज्ञान की अनुभूति प्राप्त कर ली है

अप्तुरः - शीघ्रता से गतिवान तथा तुरन्त कार्य करने वाले

सुतम् आगंत - नियमित रूप से हमारे पास आकर हमें सभी ज्ञान, विज्ञान तथा शुभ गुणों से प्रकाशित करें

तूर्णयः - ज्ञान के प्रकाश को चारो तरफ फैलाने के लिए

उस्रा इव - सूर्य की किरणों के समान

स्वसराणि - प्रातःकाल सुगमतापूर्वक आते हैं

व्याख्या :-

बुद्धि में प्रकाशित लोगों की प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ तुलना किस प्रकार की गई है?

परमात्मा ने सभी लोगों को निर्देश दिया है कि वे उन लोगों को आमंत्रित तथा स्वागत करें जो बुद्धि में प्रकाशित हैं और शीघ्रतापूर्वक उनके निकट आकर सभी दिशाओं में ज्ञान का प्रकाश करते हैं। वे अच्छे प्रकार से ज्ञान-विज्ञान तथा शुभ गुणों से सबको प्रकाशित कर सकते हैं। वे प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के समान ही सुगमतापूर्वक प्रकाश को फैलाने के लिए आते हैं इसलिए वे लाभकारी हैं।

इस मन्त्र को उन सभी ज्ञानी और बुद्धिमान लोगों के लिए एक कर्त्तव्य की तरह समझा जा सकता है जिससे वे सहज गतिपूर्वक ज्ञान का प्रकाश करते रहें। उनके इस कर्त्तव्यपालन में कोई बाधा न आये, स्वार्थी लाभ की कामना न पैदा हो, आलस्य न आये। बिना आलस्य के सहज गति महान ज्ञान के साथ सम्बन्धित है। जबकि विलासिता और आलस्य अज्ञानता से सम्बन्धित है।

जीवन में सार्थकता

बुद्धिमान लोगों का सर्वत्र सम्मान क्यों होता है?

अपने क्षेत्र के बुद्धिमान और प्रकाशित लोगों से सदैव सम्बन्ध बनाये रखना चाहिए। ऐसे लोगो की तुलना प्रातःकालीन सूर्य की किरणों से की गई है जो दिन को प्रकाशित करने के लिए स्वाभाविक रूप से आ जाती हैं। हम एक दिन की भी कल्पना नहीं कर सकते जब सूर्य की किरणें न आयें। इसी प्रकार हम बुद्धिमान, ज्ञानवान तथा प्रकाशित लोगों से सम्बन्ध बनाये बिना बुद्धि के प्रकाश, ज्ञान और शुभ गुणों की कल्पना नहीं कर सकते।

बुद्धि में प्रकाशित लोगों का सर्वत्र सम्मान होता है। इसलिए आप भी उसी प्रकार बुद्धि में प्रकाशित बनो या किसी बुद्धि में प्रकाशित व्यक्ति का अनुसरण करो।

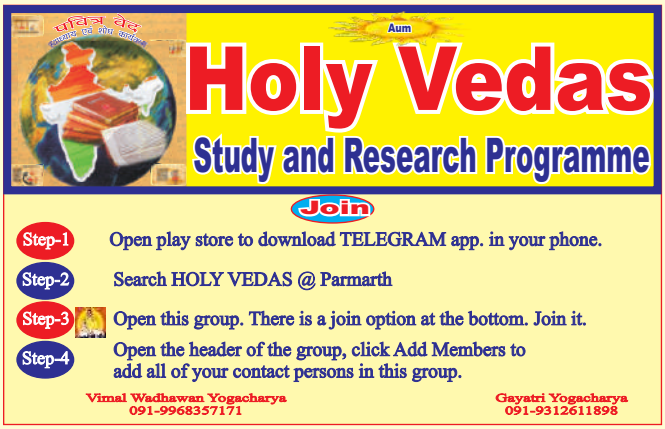

Rigveda-1.3.7

ओमा॑सश्चर्षणीधृतो॒ विश्वे॑ देवास॒ आ ग॑त।
दा॒श्वांसो॑ दा॒शुषः॑ सु॒तम्॥7॥

Omaasacharshanidhrito vishve devaasa aagata daashvaamso Daashushah sutam.

Omaasah : God's feature of protecting everything with his vast powers like knowledge, sciences, virtues, realisation etc.

charshanidhrito : holding everything with His true preachings (Vedas)

vishve devaasa : all great and enlightened men who have realised God and His knowledge

aa gata : please come to me (be in my realisation)

daashvaamso : You can make us fearless with Your Divine qualities

daashushah : give to all people

sutam : knowledge of all sciences and virtues.

Elucidation

How does God protect and hold everything in the universe?

Two principal features of God are :-

1. Protecting everything with His vast powers like knowledge, sciences, virtues etc.

2. Holding everything with His knowledge.

So we must invite and welcome all such great people who are well versed with God's knowledge and powers. Such great people can also do two important favours to us :-

1. make us fearless,

2. give us true knowledge of all sciences and virtues etc.

Practical Utility in life

What is the importance of complete knowledge and expertise?

Complete knowledge and expertise in any pursuit is welcomed everywhere as it is helpful in two principal ways :-

1. It removes fears of disturbances by empowerment,

2. It makes us aware of true knowledge.

Therefore, everyone should be a powerful and knowledgeable personality of one's pursuit. One can have a great progressive future only if he is competent to protect others from miseries/sufferings with his complete knowledge.

Rigveda-1.3.8

विश्वे॑ दे॒वासो॑ अ॒प्तुरः॑ सु॒तमा ग॑न्त॒ तूर्ण॑यः।
उ॒स्रा इ॑व॒ स्वस॑राणि॥8॥

Vishve devaaso apturah sutamaa ganta tuurnayah Usraa iva svasaraani.

Vishve devaaso : All great enlightened men who have realised God and His knowledge

apturah : swift moving and acting rapidly

sutamaa ganta : come regularly to enlightened us with all sciences, knowledge and virtues

tuurnayah : to diffuse light of knowledge in all directions

Usraa iva : as the solar rays

svasaraani : come diligently in the day.

Elucidation

How are enlightened people equated with morning sun rays?

God has ordained all people to invite and welcome those enlightened men who are swift moving to diffuse knowledge in all directions as they can better enlighten us with all sciences, knowledge and virtues. Such people are beneficial as sun rays coming diligently to diffuse light in the day.

This verse can be taken as a duty cast upon all enlightened persons to be swift moving to spread knowledge. Let no trouble, desire for selfish gains, or laziness to remain as a hurdle in performing this duty. Swift movement without laziness is related to great knowledge. Whereas, luxuries and laziness are related to ignorance.

Practical Utility in life

Why are enlightened people respected everywhere?

Always keep an active connectivity with enlightened people of your pursuit. Such people have been equated with sunrays coming for enlightenment in the day. We can not imagine a day without sunrays. Similarly, we can not imagine enlightenment, knowledge and virtues without the connectivity of already enlightened and knowledgeable people.

Enlightened persons are respected everywhere. Therefore, be that enlightened or follow an enlightened.

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में श्री रामभद्राचार्य जी द्वारा अर्नगल एवं असत्य बयानबाजी करने पर आर्य समाज मारतहल्लि के समस्त पदाधिकारियों ने रामभद्राचार्य की घोर निन्दा की

28 जुलाई, 2024 को रविवारीय सत्संग के दौरान श्री एस.पी. कुमार जी ने बताया कि गत् 20 जुलाई, 2024 को श्री रामभद्राचार्य जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में एक विवादित बयान दिया है जिस पर पूरे आर्य जगत् में आक्रोश है। हमने आर्य समाज मारतहल्लि की ओर से उनसे निवेदन किया है कि आप अपने शब्द वापस लेकर माफी मांगे या आपने जो बोला है उसे दिखायें कि कब और कहां स्वामी दयानन्द जी ने राम और कृष्ण या रामायण अथवा भगवत गीता को कपोल कल्पित कहा है। यदि वे अपने शब्द वापस नहीं लेते हैं तो आर्य समाज मारतहल्लि की ओर से दिये गये नोटिश के आधार पर अग्रिम कार्यवाही करने पर बाध्य होंगे। हम चाहते हैं कि श्री रामभद्राचार्य जी एक सन्त हैं हम उनका सम्मान भी करते हैं, किन्तु वे अपनी भूल को स्वीकार करते हुए अपने शब्द वापस लेकर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी का सम्मान करते हुए सत्य को स्वीकार करें। महर्षि दयानन्द जी ने हमेशा से पूरे संसार के कल्याण की भावना से कार्य किया। महर्षि दयानन्द जी एक महान् दार्शनिक थे, उन्होंने हमेशा से राष्ट्ररक्षा और मानवता के कल्याण की भावना से कार्य किया है। उन्होंने कहा कि हम सभी का कर्त्तव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में यदि कोई भी व्यक्ति गलत बात कहेगा तो हम उसका मुंहतोड़ जवाब देंगे।

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी द्वारा रचित 'सेहत का खजना' नाम पुस्तक का विमोचन किया गया साप्ताहिक सत्संग में बाहर से आये हुए आर्य महानुभावों का भव्य स्वागत किया गया

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर में 28 जुलाई, 2024 के रविवारीय सत्संग के उपरान्त दिल्ली, आगरा, बरेली एवं अन्य स्थानों से आये हुए आर्य महानुभावों का भव्य स्वागत किया गया तथा वैदिक प्रवक्ता डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी द्वारा रचित 'सेहत का खजाना' नामक पुस्तक का विमोचन श्री एस. पी. कुमार जी के कर–कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बरेली से डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी सपरिवार, आर्य समाज साकेत, दिल्ली के प्रधान श्री धर्मवीर पंवर, बरेली वेद प्रचार मण्डल की संस्थापक सदस्य श्रीमती नूतन कोचर, श्री उमाकान्त मिश्रा आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मैं जब भी बंगलौर आते हैं और श्री एस.पी. कुमार जी को देखता हूँ तो मन को अत्यन्त प्रसन्नता होती है। वे दक्षिण भारत में आकर जिस प्रकार से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को तीव्र गति प्रदान करे रहे हैं वह अपने आप में अनुकरणीय हैं। श्री एस.पी. कुमार जी को फकीरे दयानन्द जी नाम से सभी लोग जानते हैं। उनका यह नाम निश्चित रूप से सार्थक होता दिखाई दे रहा है, हम उन्हें नमन करते हैं। फकीरे दयानन्द जी आगरा से आकर बंगलौर में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए प्राण–पण से जुटे हुए हैं, उनके कार्यों को देखकर हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम के अन्त में श्री कुमार जी ने डॉ. श्वेतकेतु जी का आर्य समाज मारतहल्लि के समस्त पदाधिकारियों एवं साथियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद करते हुए डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि डॉ. श्वेतकेतु जी अपनी पुस्तक का विमोचन कराने के लिए बरेली, उत्तर प्रदेश से चलकर हमारे आर्य समाज मारतहल्लि में पधारे इसके लिए मैं उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। कुमार जी ने कहा कि इस अवसर पर डॉ. श्वेतकेतु जी ने हमें जो सम्मान प्रदान किया इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। पुस्तक विमोचन के उपलक्ष्य में डॉ. श्वेतकेतु जी ने आर्य समाज में उपस्थित अन्य महानुभावों को भी जो सम्मान प्रदान किया उसके लिए मैं उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ। श्री कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति कोई कार्य अकेला नहीं कर सकता है यह आप सभी के सहयोग से ही सम्भव हुआ है, इसलिए यह केवल मेरा ही नहीं अपितु आप सभी का सम्मान है।

इस अवसर पर श्री महेन्द्र प्रताप तनेजा जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दी गई। आचार्य श्री रामतीर्थ शास्त्री जी ने मन्त्रोच्चार के माध्यम से उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य जीवन की कामना की प्रार्थना की। साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित सभी आर्यजनों ने उन्हें पुष्प वर्षा के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की। शांति पाठ एवं राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण

प्रत्येक रविवार को सत्संग के पश्चात् दोपहर 12 बजे से आर्य समाज भवन में शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण होता है। कृपया प्रातःकालीन समय में खाली पेट शुगर माप कर आयें।

Free Ayurvedic Eye Drops

Very costly drops prepared with medicinal water of Holy Mother Ganga, Saffron and other material. Made available with courtesy of Shri Subhash Garg ji.

फकीरे दयानन्द (एस पी कुमार)
9342254131

विमल वधावन योगाचार्य
9968357171

52, (Sy. No. 38), L.N. Pura, Adjacent to The Brilliant School, Behind Bata Showroom, ITPL Road, Kundalahalli Gate, Bangalore-560037